ISSN2321-5372

# साने गुरुजी का स्मृति दिन

उदात्तता, त्याग, पावित्र्य, औरों के लिए जीना, समर्पणवृत्ति इन समस्त गुणों का समुच्चय साने गुरुजी । वे स्वच्छ राजनीतिज्ञ, कर्मकांडरहित आध्यात्मिक, प्रज्ञानी, समाज सुधारक, सौंदर्यप्रेमी मातृहृदयी, वीर पौरूषयुक्त, निर्मलहृदयी, समर्पित देशभक्त, बलसागर भारत के स्वप्नद्रष्टा,''आई माझा गुरु, आई माझा कल्पतरू । सौख्याचा सागरू आई माझी'' के उद्गाता थे । ऐसे संस्कारभूषण साने गुरुजी को आंतर भारती परिवार विनम्र नमन करता है ।

# आंतर भारती

## ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

* वर्ष : ६० * अंक ७ * जुलाई २०२३* १० रुपये * वार्षिक : १०० रुपये * आजीवन : १००० रुपये

## आंतरभारती (मराठी) दीपावली अंक को पुरस्कार

मुंबई में संपन्न कार्यक्रम में आंतरभारती (मराठी) दिवाली अंक २०२२ को मुंबई मराठी पत्रकार संघ और श्री.रामशेठ ठाकूर समाज विकास संस्था,पनवेल के संयुक्त तत्वावधान में प्रदत्त उत्कृष्ट दिवाली अंक का पारितोषिक १५०००/- सहित प्राप्त हुआ। मुंबई मराठी पत्रकार संघ,मुंबई के हॉल मे दिनांक ०३/ ०६/ २०२३ को पारितोषिक प्रदान कार्यक्रम में ट्रॉफी और .१५०००/- का चेक प्रदान किया गया।आंतरभारती (मराठी) दिवाली अंक के संपादक श्री. लक्ष्मीकांत देशमुख जी की ओर से अंक के प्रबंध संपादक तथा आंतरभारती के राष्ट्रीय कार्यवाह डॉ.डी.एस.कोरेजी ने ट्रॉफी और चेक का स्विकार किया। १४५ दिवाली अंक पूरे महाराष्ट्र राज्य से प्रतियोगिता में शामिल थे।

**आंतर भारती, नाशिक कार्यकारिणी की बैठक मा. लक्ष्मीकांत देशमुख (विख्यात साहित्यकार) के मार्गदशन में संपन्न हुआी।**

**आंतर भारती, नाशिक की अध्यक्ष सुश्री आभा आरोटे, कार्यवाह विष्णू आव्हाड ने मा. लक्ष्मीकांत देशमुख का सम्मान किया।**

**आंतर भारती, अंबाजोगाई की ओर से साने गुरुजी का स्मृतिदिन मनाया गया।**

# आंतर भारती

**हिन्दी मासिक पत्रिका**

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
**साने गुरुजी**

प्रेरक, संवर्ध्दक संपादक
**स्व. यदुनाथ थत्ते**

संस्थाध्यक्ष/पूर्व संपादक
**स्व. सदाविजय आर्य**

▪ कार्यकारी संपादक
**प्राचार्य सुभाष वर्धमान शास्त्री**
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर – ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

▪ प्रधान संपादक
**डॉ. सी. जय शंकर बाबु**
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी–६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

**आंतर भारती साने गुरूजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।**

विश्वस्त – कोषाध्यक्ष
**डॉ. उमाकांत चनशेट्टी**
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर–४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

**प्रबंध कार्यालय**
**आन्तर भारती**
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

**संपादक**
ज्योतिराव लढके
**मार्गदर्शक**
**▪ डॉ. इरेश स्वामी ▪ अमर हबीब ▪ पांडुरंग नाडकर्णी ▪**
**सहयोगी – मधुश्री आर्य**

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें ।

**ANTAR BHARATI :** A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती ( मासिक पत्रिका) प्रकाशक कार्याध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की ।

# आंतर भारती – जुलाई–२०२३

## इस अंक में


| | | |
|---|---|---|
| १) संपादकीय : भारतीय डिजिटल चेतना में मानवीयता कितनी? | – | ३ |
| २) वेमना का तत्वज्ञान.... | – | ७ |
| ३) बसव वचन... | – | ८ |
| ४) तिरुवल्लुवर वाणी... | – | ९ |
| ५) वैचारिक साधना का अमृत – प्रवास | – | १० |
| ६) पोती से किया मोबाईल सीखने का वादा ! | – | १५ |
| ७) काव्य भारती – अपने उजाले | – | १६ |
| ८) भगवान के दर पे | – | १७ |
| ९) कानूनों ने किसानों की दुविधा बढा दी | – | १९ |
| १०) किसान विरोधी कानूनविषय में पुस्तक (शेतकरीविरोधी कायदे).. | – | २१ |
| ११) संघर्ष – ए– मोहब्बत | – | २२ |


## आंतरभारती का स्व. सदा विजय आर्य स्मृति अंक
## एक निवेदन

स्वर्गीय सदाविजय आर्य का प्रथम स्मृति दिन सितंबर महिने में है। आप सभी जानते हैं कि स्व. यदुनाथ थत्ते जी के पश्चात आंतरभारती मासिक तथा संस्था की धुरा स्वर्गीय सदा विजय आर्य ने अनेक दशकों से सुचारुरूप से संभालकर आंतरभारती आंदोलन को और मजबूत किया है। स्वर्गीय आर्यजी के प्रथम स्मृति दिन के उपलक्ष्य मंर आंतरभारती का सितंबर २०२३ का अंक प्रकाशित होगा। अतः लेखकों से निवेदन है कि स्वर्गीय आर्यजी का व्यक्तित्व–कर्तृत्व, आंतर भारती आंदोलन तथा मासिक के लिए योगदान, संस्मरण आदि विषय पर अपने लेख लगभग ५००–६०० शब्दों मे लिखकर दि.१० अगस्त २०३० तक श्री अमर हबीब (मोबा. नंबर ८४११९०९९०९) के व्हाट्सअप पर भेजने की कृपा करें।

भवदीय,
संपादक मंडल,
आंतरभारती मासिक

संपादकीय

# भारतीय डिजिटल चेतना में मानवीयता कितनी?

– –डॉ. सी. जय शंकर बाबु

साने गुरुजी मानवता के पुजारी थे । मानव–मानव के बीच किसी प्रकार के भेदभाव के व्यवहार को वे नहीं मानते थे । वे सबके प्रति न्याय, ममतापूर्ण व्यवहार के पक्षधर व हिमायती थे । उनके व्यवहारमें इन भावनाओं के स्पष्ट झलक हम देख सकते हैं । स्वाधीनता आंदोलन के दौर में, पराये शासन में भी वे अपने साथी मनुष्य के हित में सदा लगे रहें । साने गुरुजी की मानवता की चेतना, कल्याण की दृष्टि, हित का व्यवहार, स्नेहपूर्ण रवैया और समर्पण की भावना के परिप्रेक्ष्य में ही आंतर भारती के कार्यकर्ता अपने चारों तरफ़ के समुदाय के बीच अपने कर्तव्य को निभाने में सदा सचेत होते हैं । पारदर्शिता और नैतिकता साने गुरुजी की चेतना के अभिन्न गुण थे ।

भारतीय डिजिटल चेतना में मानवीयता की मात्रा परखने के मायने कई हैं । साने गुरुजी के दर्शन के परिप्रेक्ष्य में हम चंद पल सोचने की कोशिश करेंगे । गाँवों तक आज डिजिटल सुविधाओं का विस्तार हो रहा है, यह शुभ संकेत है । जनकल्याण और समतापूर्ण संव्यवहार की दृष्टि से इन सुविधाओं के विस्तार के मायने हैं । रोटी, कपड़ा, मकान के बाद आज एक बड़ी आवश्यकता के रूप में डिजिटल सुविधाओं की ओर हमारा ज्यादा ध्यान है । रोटी के आर पार हवा और पानी भी हैं, जिनकी पहले बड़ी चिंता नहीं थी, लेकिन आज दूषित पर्यावरण और बड़े मुनाफ़े के व्यापारों की दुष्ट–चेतना से पानी को तो उपभोक्ता संस्कृति की, खरीद–फरोक्त की वस्तु के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है । यह भारतीय मानवीय चेतना पर काला धब्बा है । मानव की स्वार्थ ने प्रकृति के साथ बड़ा छेड़–छाड़ किया है, यह विडंबनापूर्ण दुर्व्यवहार लगातार जारी है । कल–परसों हवा के मामले में भी यही व्यापारिक संस्कृति धीरे–धीरे लागू होने जा रही है, इसके स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं । क्या ये सारी विडंबनाएं भारतीय संस्कृति को भूलकर पश्चिम के अंधाधुंध अनुकरण के परिणाम तो नहीं हैं? भारतीय संस्कृति की कल्याणकारी चेतना गायब होकर दुनिया की लूटपाट की व्यापारिक चेतना अपनाने के लिए ही डिजिटल सुविधाएँ हम बढ़ाना चाहते हैं तो धिक्कार है ऐसी विडंबनात्मक चेतना का ।वस्तुओं के आदान–प्रदान से मुक्त होकर मुद्रा की ओर प्रस्थान से आत्मनिर्भर गाँवों की शांति, ईमानदारी, मानवता आदि श्रेष्ठ दर्शन बड़ी तेजी से खत्म होते हुए देखने की नौबत पश्चिम की व्यापारिक संस्कृति के अनुकरण का ही परिणाम रहा है । सेवा, आतिथ्य जैसी भावनाओं के साथ भी व्यापार की बड़ी

विडंबनाएं जुड़ गयी हैं ।आज सर्वत्र कल्याणकारी चेतना की जगह व्यापारिक चेतना का साम्राज्य ही बढ़ रहा है । विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के क्रम में, उनके माध्यम से जन–कल्याण की चेतना से उन सुविधाओं की पहुँच हर किसी तक सुनिश्चित करने के प्रयास स्वागतयोग्य हैं । विज्ञान का उपयोग विकास के लिए किया जा सकता है, विनाश के लिए भी किया जाना संभव है । सम्राट अशोक ने विशाल भारत में जिस अहिंसक चेतना की नींव डाली थी, वह विनाश की जगह कल्याण की दिशा में अग्रसर होने को ही प्रेरित करती है । डिजिटल सुविधाएँ केवल संचार तक सीमित नहीं हैं, कई सेवाओं में बहुत उपयोगी साबित हो रही हैं । शासन हो या व्यक्ति कोई भी अपनी चेतना और उद्देश्य के अनुरूप ही इन डिजिटल सुविधाओं का प्रयोग करते हैं । डिजिटल दुनिया के विकास के क्रम में उसके प्रयोग के लिए भारत द्वारा किये गये प्रयासों में दुनिया के एकमात्र देश ठहराता है जिसने समूची जनता के लिए 'आधार' की व्यवस्था भी कर दी है । 'आधार' पहचान की दृष्टि से, जन–कल्याण की दृष्टि से उपयोगी व्यवस्था साबित होनी चाहिए । मगर डिजिटल सेवाओं में अमानवीय व्यवहार के बढ़ते हुए आज 'आधार' वरदान की जगह अभिशाप भी साबित हो रहा है । कुछ मामलों में लगता है कि डिजिटल परिवेश ने आदमी की पहचान को एक नंबर तक सीमित कर दिया है ।कंप्यूटरों और स्मार्टफ़ोन के प्रयोग के विस्तार के क्रम में निश्चय ही डिजिटल चेतना का विकास होना चाहिए था । इस बात को नहीं नकारा जा सकता है कि डिजिटल चेतना आज कई मायनों में संकुचित रूप में ही विकसित हो रही है ।

यंत्रों के आविष्कार के पूर्व की मानवता की विशिष्टता यंत्रों से उत्पन्न व्यापारिक माहौल को शोषक संस्कृति के कारक बताया जाता है । व्यापारिक मुनाफ़े की कमाई की दृष्टि रखनेवाले इस बात को वाम पक्ष के तर्क के रूप में भले ही मानते हैं, सचमुच व्यापारिक लक्ष्यों ने गरीब व वंचितों के कल्याण व हितों की बड़ी उपेक्षा किया है। डिजिटल क्रांति जिस पारदर्शिता को व्यापक आयाम प्रदान करता है और कल्याणकारी योजनाओं को गति प्रदान करने में सक्षम भी है, मगर मानवता की भावनाओं के विकास से ही उस क्रांति के लाभ जन–जन को मिल सकता है, अन्यथा केवल सुविधाभोगियों के हितों की ओर ही ध्यान रहता है ।

हम ध्यान से सोचें तो स्पष्ट है कि डिजिटल क्रांति का मानव कल्याण के लिए कई रूपों में उपयोग किया जा सकता है, इसके लिए निष्ठा, प्रतिबद्धता और ईमानदारी की ज़रूरत है । उदाहरण के लिए पिछले माह ओड़िसा में बड़ी रेल दुर्घटना जो हुई, उसमें लगभग ३०० लोग अपने प्राण खो चुके हैं और एक हज़ार से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। आरक्षण श्रेणी के रेल यात्रियों के लिए कई

सुविधाएँ हैं । एक सुविधा यात्रा–बीमा की भी, जिसके लिए उन्हें केवल ३५ पैसे खर्च करने की आवश्यकता होती है । यह सुविधा साधारण यानी द्वितीय श्रेणी अनारक्षित यात्रियों के लिए नहीं दी जा रही है । न ही उन्हें पहचानने के लिए कोई व्यवस्था । जबकि आज लगभग हर रेलवे स्टेशन में सीसीटीवी की व्यवस्था है, टिकट घरों में टिकट लेने वाले यात्रियों के हितार्थ निश्चय ही उनकी पहचान की व्यवस्था की जा सकती है ।

आधार जैसी व्यवस्था से अनपढ़, गरीब लोगों को कई यातनाएँ झेलने की स्थितियों की ख़बरें हमें अक्सर पढ़ने को मिलती हैं । आम जनता की यातनाएँ कम करने की जगह बढ़ानेवाली डिजिटल चेतना बड़ा कलंक है ।

आज़ादी प्राप्ति के बाद अंग्रेज़ों की सिखायी गयी बाबूराज को डिजिटल व्यवस्था के बल पर खत्म करने की जगह और बढ़ाकर आम जन को कई यातनाएँ दी जा रही हैं । डिजिटल क्रांति का लाभ उन्हें देने में ईमानदारी, निष्ठा, पारदर्शिता की आवश्यता है । ऐसे गुणों के अभाव में भ्रष्टता को ही बढ़ावा मिल जाता है । कई बड़े विभागों, कार्यालयों की डिजिटल चेतना को देखते हुए लगता है कि वे अभी भी १८वीं सदी के बाबूराज के पक्षधर हैं । जहाँ कोई फार्म भरने की अपेक्षा होती है, वहाँ पीडीएफ़ में फार्म वेबसाइट में डाल देने से कंप्यूटर के माध्यम से भरने में कितनी दिक्कतें होती हैं, इसकी चिंता बाबू लोगों की नहीं होती । ऐसी ही कई विडंबनात्मक स्थितियाँ हैं जिनकी बाबू वर्ग उपेक्षा कर देते हैं । २१ सदी में ऐसी डिजिटल चेतना शासन और सेवाओं के लिए बड़ा कलंक है । कई वेब–सेवाओं के साफ़्टवेयर इस रूप में होते हैं, आमजन को बड़ा कष्ट झेलना पड़ता रहता है । डिजिटल साधनों को केवल अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग करने वालों में ऐसी चेतना जागृत नहीं हो पाना बड़ी विडंबना है । अभी डिजिटल चेतना सही मायने में स्थापित नहीं हो पायी, इस बीच कृत्रिम बुद्धि की तीसरी पीढ़ी अपनी बड़ी प्रगति के साथ प्रजनक कृत्रिम बुद्धि के रूप में सामने आ चुका है । इसके प्रयोग से लगभग धीरे–धीरे जहाँ मानव बुद्धि से निर्णय की अपेक्षाएँ हैं, वहाँ पर भी कृत्रिम बुद्धि को अपनाए जाने की संभावना है । प्रगति हर तरह से स्वागतयोग्य है, मगर मानवता की चेतना के बिना कोई भी प्रगति मुट्ठी भर लोगों की सुविधा असंख्य दीन लोगों की असुविधा साबित हो जाएगी । हमें ऐसी स्थिति से बचने के उपाय करने की बड़ी ज़रूरत है ।

डिजिटल सुविधाओं के विकास के बाद अधिकांश समय सुविधा भोगी लोग उन्हीं साधनों में समय व्यतीत करते नज़र आते हैं । स्वप्रचार में बड़ी रुचि लेते हैं । ज़रूरतमंदों की मदद के लिए प्रौद्योगिकी, डिजिटल सुविधाओं के सकारात्मक प्रयोग

की जगह कई नकारात्मक प्रयोग ही नज़र आते हैं । डिजिटल क्रांति ने स्वार्थी व्यक्तियों की तादाद ही बढ़ा दी है, ऐसा लगता है । भाईचारा, स्नेह, आत्मीयता के गुणों के साथ अपने–पराये सभी के हितार्थ इन डिजिटल सुविधाओं का भरपूर प्रयोग किया जा सकता है, इसके लिए हमें आत्ममंथन करने की अपेक्षा है । आशा है, इस दिशा में आवश्यक चेतना के विकास में हम अपना समय अवश्य दें ताकि मानवता के विकास के सपने को हम साकार कर पाएँ।

**राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस, राष्ट्रीय डाक कर्मचारी दिवस (१ जुलाई), राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस (९ जुलाई), विश्व जनसंख्या दिवस (११ जुलाई), कारगिल विजय दिवस (२६ जुलाई),विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस (२८ जुलाई), अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस (२९ जुलाई)आदि के अवसर पर अग्रिम शुभकामनाओं सहित...**

<u>**समाचार भारती**</u>

## आंतर भारती संभाजीनगर की ओर से स्पर्धा

संभाजीनगर– आंतर भारती संभाजीनगर की ओर से ५–६ कक्षा छात्रों के लिए चित्र को रंगाना स्पर्धा दि. २७.६.२०२३ को आयोजित थी । दि. २, जून को प्रधानाचार्य धन्यकुमार टिळक की अध्यक्षता में पारितोषिक वितरण सम्पन्न हुआ । आंतरभारती अध्यक्ष ॲड. श्री. श्रीकिशन शिंदे ने आंतर भारती विचारधारा तथा भारत जोडो संकल्पना स्पष्ट की । अनुष्का रामटेके, उज्वला जाधव, लता मुसळे आदि ने साने गुरूजी के जीवन की विविध पहलुओं पर विचार व्यक्त किया । डॉ. अलका वालचाळे की निवृत्ति निमित्त यह कार्यक्रम आयोजित था । डॉ. अलकाजी ने छात्र एवं शिक्षकों के लिए विशेष संदेश इस अवसर पर दिया जॉय डॅनिअल, प्रा. कैलास पैठणे, प्रतिभा शर्मा, चिमणकर तथा अन्य उपस्थित थे ।

**– प्रेषक : डॉ. अलका वालचाळे**

## संभाजीनगर आंतर भारती की ओर से कथामाला प्रारंभ

संभाजीनगर : आंतर भारती की ओर से कलावती चव्हाण माध्य. विद्यालय में साने गुरुजी कथा माला को प्रारंभ किया गया । अध्यक्ष श्रीमती संध्या काळकर ने साने गुरुजी पर गौरवयुक्त वक्तव्य दिया । डॉ. अलका वालचाळे ने आंतर भारती का पारिचय कराया । उज्वला जाधव तथा मंगला निकाळजे ने सुंदर कथाएं प्रस्तुत की । छात्र अवधूत मुळे ने एक कथा सुनायी । कैलास पैठणे तथा लता मुसळे के साथ अनेक शिक्षक व छात्र उपस्थित थे । आंतर भारती की ओर से श्यामची आई पुस्तक वितरित की गयी ।

**– प्रेषक : डॉ. अलका वालचाळे**

# वेमना का तत्व-चिंतन

## तेलुगु मूल – योगी वेमना

**(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)**

**पेक्कु जनुल गोट्टि पेदल**
**वधियिंचि**
**डोक्ककोरकु नूळ्ळु दोंगिलिंचि**
**एक्कडिकिनि बोव एरिगि यमुडु**
**जंपु**
**विश्वदाभिराम विनुर वेम ।**

कई लोगों को मारकर गरीब का वध करके
पेट के लिए गाँवों को लूटने वाले
कहीं भी क्यों न छिपें, यमराजवध कर देंगे ।
विश्वदाभिराम! सुनरे वेमा !

**व्याख्या–**बड़ी संख्या में गरीब लोगों को मारकर, उन्हें मृत्युलोक भेजकर, अपने पेट–स्वार्थ के लिए गाँवों को लूटने वाले भी मृत्यु के प्रिय हो जाते हैं । वे जहाँ कहीं छिप जाएं मगर यमराज उन्हें ढूँढ़कर अपने साथ ले जाते हैं । वेमना का मानना है कि गरीब लोगों को यातनाएँ नहीं दी जानी चाहिए । अपने स्वार्थ के लिए गरीबों को यातनाएँ देने, उन्हें लूटने वालों को यमराज वैसे नहीं छोड़ेंगे । उन सुविधा–भोगियों को भी नरक में प्रवेश सहज ही हो जाएगा ।

# महात्मा बसवेश्वर वचन

**।। मूळ कन्नड वचन ।।**

मनेयोळगे कत्तले हरियदोडा ज्योतियदे को ?
कूडल संगम देवर मनमुट्टि पूजिसि
कर्म हरियदोडा पूजिय दे को ?

**हिंदी काव्यानुवाद**

घर में अंधेरा भरा हो तो ज्योति के रहते ?
कूडल संगम देव की मनःपूर्वक पूजा करने से कर्म
बंधन दूर न होने हो तो पूजा कर के क्या फायदा ?

**भाष्य**

ईश्वर की पूजा का अर्थ जल, गंध, फूल, चढाना या भोग लगाना नहीं है । घर में होने वाला अज्ञान अंधःकार दूर होने के लिए कूडल संगम देव की मासपूजा आवश्यक है । कर्मकाण्ड का विरोध करते हुए मानस पूजा का महत्व इस वचन में विशद किया है ।

**डॉ इरेश सदाशिव स्वामी**
विद्या, १२ ब्रहमचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

# तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

## तमिल मूल – संत तिरुवल्लुवर

**(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)**

**प्रथमखंड – अरत्तुपाल (धर्मखंड)**
**तुऱवऱवियल्(संन्यास–धर्म)**
**अध्याय २६. पुलाल् मरुत्तल्  (मांसाहार त्यागना)**

**तन्नून् पेरुक्कट्ऱकुत्तान् पिऱिदु ऊनुण्बान्**
**एङ्ङनम् आळुम् अरुळ् ।**
**(कुरल – २५१)**

**निज देह को**
**बढ़ाने मांसाहार?**
**दया चौपट ।**

**भावार्थ** –अपने बदन के मांस को बढ़ाने के लिए अन्य जीवों के मांस को खाने वाले के ह्दय में करुणाभाव का निवास कैसे हो सकता है?तिरुवल्लुवर का यह मानना है कि दयावान बनने के लिए मांस भक्षण से मुक्त होने की आवश्यकता है ।

**पोरुळाट्चि पोट्रादार्क्कु इल्लै अरुळाट्चि**
**आङ्गिल्लै ऊन तिन्बवर्क्कु।**
**(कुरल – २५२)**

**अपव्ययी हो**
**न धनी, मांसाहारी**
**दयाविहीन ।**

**भावार्थ** –जिस भांति अपव्यय करनेवाले के द्वारा धन–संचय संभव नहीं है, उसी भांति मांस खाने वालों को दयालुता का सुख नहीं मिलता है ।तिरुवल्लुवर का कहना है कि मांस खाने वाले दयाविहीन बनकर रह जाते हैं ।

# वैचारिक साधना का अमृत - प्रवास

– भानू काळे

**वैचारिक साधन का अमृत–प्रवास साने गुरूजी से मूल्यात्मक समाज प्रबोधन का व्रत आंखो के सामने रख कर एक समर्पित ध्येयवाद से स्थापित की गई साधना साप्ताहिक ने अभी अभी अमृतमहोत्सव वर्ष में पदार्पण किया है। साधना के इस पचहत्तर वर्ष में पदार्पण के निमित्त एक सिंहावलोकन......**

१५ अगस्त १९४७, यह भारत की तरह संसार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण दिन है। कारण उस दिन केवल भारत में ही नहीं अनेक ध्येयवादी तरूणों ने सहभाग लिया था। तथा सभी के मन में '' सदियों के बाद पहला रमणीय प्रातः'' यही भावना थी। उस प्रातः की लालिमा क्षितिज पर फैल रही थी। उसी दिन साधना साप्ताहिक का जन्म हुआ। देश स्वतंत्रता के अमृतमहोत्सव को मना रहा है। इधर साने गुरूजी की साधना भी अमृत महोत्सव के वर्ष में पदार्पण कर रही थी।

'' मराठी वृत्तपत्रों का इतिहास'' अपने ग्रन्थ में रा.के. लेले के कथनानुसार स्वतंत्रतापूर्व ही साने गुरुजीने खानदेश से कुछ काल कॉंग्रेस नाम का वृत्तपत्र शुरू किया था। वह अल्पकाल ही टिका। आगे गांधी जी की हत्या के बाद गुरूजी के २१ दिन के उपोषण काल में उन्होंने १० फरवरी १९४८ से 'कर्तव्य' नाम का सायं दैनिक मुम्बई में प्रारम्भ किया। परन्तु वह भी जैसे –तैसे सिर्फ चार महीने चला। उसके बाद साधना साप्ताहिक का छापखाना तथा प्रत्यक्ष पत्र मुंबई में चलते रहे। वह सिर्फ साने गुरूजी सत्कार निधि के रूप में जो पैसा जमा किया था उसके जोर पर। उनके ही संपादन में १५ अगस्त १९४८ में 'साधना'' का पहिला अंक प्रकाशित हुआ। बदकिस्मती से आखिर के पत्र में व्यक्त की गई इच्छानुसार आचार्य जावडेकर तथा राव साहेब पटवर्धन ने '' साधना'' के संपादक पद की धुरा संभाल ली। १९५५ में जावडेकर की मृत्यु हो गई और सारी जिम्मेवारी रावसाहब पटवर्धन पर आ गई। उन्होंने संपादकपद छोडा और यदुनाथ थत्ते संपादक बने और १९८० तक बने रहे। आगे ना.ग. गोरे, वसंत बापट, ग.प्र.प्रधान जैसे विद्वान संपादकों की श्रृंखला का साधना को लाभ मिला।

'' साधना'' का जन्मकाल अनेक ध्येयवादी युवकों का वसंत काल था। बयालीस के आंदोलन की धुन सवार थी। सपर्पण के लिए उत्सुक युवा जनों में उत्साह की नई नई लहरें उठ रही थी। वाई में ऑक्टोंबर १९४७ में स्थापित हुआ नवभारत

मासिक तथा मुंबई में ९ नवम्बर १९४७ विवेक साप्ताहिक की स्थापना इसी उत्साह का उदाहरण था । कुल मिलाकर समाज स्वप्नों सें भरा हुआ था इसीलिए उस समय अन्य अनेकों का सहकार्य साधना को मिलता गया ।

परन्तु आगे चलकर यह परिस्थिति तेजी से बदलने लगी । मेरा साधना से १९९७ में संपर्क आया । अर्थात डॉ नरेंद्र दाभोलकर संपादक बनने के बाद अंतर्नाद तथा साधना के लिए बहुत से चंदा देने वाले सदस्या थे तथा साधना में नियमित लिखनेवाले दत्तप्रसाद दाभोलकर, ज्ञानेश्वर मुळे, दत्ता दामोदर नायक, विनय हर्डीकर, सुरेश द्वादशीवार आदि लेखक अन्तर्नाद के ही लेखक होते थे । उनसे बोलते समय कभी कभी साधना का विषय निकलता तब साधना की परिस्थिति बहुत अच्छी नहीं थी । वे बदलते काल से जुड नहीं सके । ''सानेगुरूजी के धडपडणारी'' मुले सफेद बालों के हो गए थे । पुराने निष्ठावान चंदा देने वाले थे फिर भी आगे कैसे होगा ? यह प्रश्न था ही परन्तु करो मत चर्चा पराभव की इतनी ।

युध्द में सूरमा अथी है कई

यह सुरेश भट की पंक्तियां मानने वाले डॉ. नरेंन्द्र दाभोलकर के प्रयत्न जारी रखे । दाभोलकर ने दृढता से प्रयत्न जारी रखे ।

दाभोलकर ने साधना की विचारधारा स्पष्ट सामने लाई । विरोधी मतों को भी सामने लाया–उदाहरण स्वरूप, चेतन पंडित के पर्यावरण वादों के विरोधी या देवेन्द्र गावंडे के नक्सलवादी विरोधी लेखों से कुछ अपने पारंपारिक वाचक नाराज हुए है, इसकी कल्पना होने पर भी साधना प्रयत्नपूर्वक छापी । कई उत्तम विशेषांक छापे उन्हें बहुत लोगों तक पहुँचाया हीना कौर रखान या राजा शिरगुणे आदि की अभ्यासवृत्ति देखकर अलग अलग विषयों पर लिखने प्रेरित किया । बालक–कुमार पाठकों के लिए विशेषांक निकालना शुरू किया । इन सब संपादकीय उपक्रमों को उन्होंने व्यावसायिकता के साथ जोडा । साधना मीडिया सेंटर खडा किया । पर्याप्त कॉर्पस (स्थावर निधि) खडी की, उसीसे संस्था के लिए नियमित आय की सुविधा हो गई । दिवाली अंक के लिए स्वयं घूमघूमकर प्रतिवर्ष बहुत से विज्ञापन लाते । निढाल हो रहे पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय को उन्होंने श्यामू की मां द्वारा आगे बढाया। नियतकालिक पत्रिकाओं में लेख छापने के साथ पुस्तक निकलना यह किसी भी साहित्यिक को अधिक प्रिय होता है । साप्ताहिक का विक्री आयुष्य (सेल–लाइफ) ज्यादा से ज्यादा दो तीन सप्ताह होता हैं । परन्तु पुस्तक कई वर्ष बाजार में बिकती रहती है । इसलिए यही छापना अधिक उचित तथा लाभप्रद था । इसके अतिरिक्त स्वयं का कार्यालय, विक्री केंन्द्र

तो था ही सब दृष्टियों से पुस्तक प्रकाशन बढाना ही लाभप्रद था ।

साधना की सारी यात्रा एक समव्यावसायिक के नाते से दूर से परन्तु बारकाई से देख देखता था और कोई भी उसकी प्रशंसा करे ऐसी थी । कुल मिलाकर साधना का संपादकपद डॉ. दाभोलकर ने बहुत गंभीरता से निभाया । अनेक कर्मों में से एक काम ''इस दृष्टि से उन्होंने कभी नहीं देखा'' उनका बडा सहयोग अर्थात २००७ से युवा संपादक, २०१० से कार्यकारी संपादक तथा अन्य संपादक विनोद शिरसा के रूप में उन्होंने उत्तम तरूण वारसद तैयार किया । ''नशीब न मानने वाला नसीबवान मनुष्य'' ऐसा स्वयं का वर्णन करने वाले दाभोलकर ने साधना की कायापलट कर दी थी, ऐसा कह सकते हैं ।

साधना के बारे में लिखते समय सहकारी सर्वेसर्वा अप्पासाहेब का उल्लेख नहीं टाल सकते । मृत्यु के पूर्व कुछ वर्ष वे साधना के कार्यकारी विश्वस्त भी थे । विज्ञापन तथा अन्य प्रकार से उनका साधना को भरपूर सहयोग तथ अन्यों की अपेक्षा अधिक आर्थिक सहायता थी ।

ठीक दस वर्ष पहले यानी १३ अगस्त २०१२ को साधना साप्ताहिक ने ६५ वें वर्ष में पदार्पण किया तब डॉ. दाभोलकर ने 'मराठी नियतकालिका के आव्हान तथा अवसर' इस विषय पर एक परिसंवाद आयोजित किया था 'उसमें' 'अंतर्नाद' 'अनुभव' तथा 'माहेर' के संपादकों तथा साधना के कार्यकारी संपादक विनोद सिरसाट ने भाषण किया था । वे चार भाषण साधना के १ सितम्बर २०१२ के अंक में प्रकाशित हुए थे 'साधना' के वृतांत के अनुसार परिसंवाद की पूर्व तैयारी के लिए दाभोलकर, रा.ग. जाधव तथा शिरसाठ की चर्चा चलते समय जाधव सर ने कहा था । सिर्फ कंटेंट पर चर्चा हो तब शिरसाठ ने कहा, सर एक मर्यादा के बाद अंक का दर्जा यह व्यवस्थापक न वितरण, तथा अर्थ व्यवस्था पर ही अवलंबित होता है । अपने भाषण में शिरसाठ ने ये वाक्य दो बार कहे थे तथा पांच वर्षों के बाद साधना के अंक (१ सितम्बर २०१७) संपादक शिरसाठ ने वह भाषण फिर से छापा भी था ।

साधना में हो सकने वाले भावी परिवर्तनों का सुखद नाद था । इस परिसंवाद में नियतकालिक के संपादकों के सामने सबसे बडा आव्हान स्वयं को अपडेट करना ही है ऐसा शिरसाठ ने कहा था । स्वयं को अपडेट करना वैचारिक स्तर पर ही हो यह अपेक्षा उस समय मेरे मन में छप गई थी। उदाहरणार्थ '' स्थापण्या समता शांती'' यह साने गुरूजी का पहले अंक से सामने रखा हुआ ध्येय था । इस ध्येय में निहित मूल्य सदा रहने ही चाहिए । परन्तु उसके प्रगटीकरण का वैचारिक आग्रह समयानुसार बदलना चाहिए । क्योंकि पिछले ७५ वर्षों में यह जग खूब बदल गया है । कई पाश्चात्य

देशों में आज समता और शान्ति ये मूल्य प्रस्थपित हो गए हैं । वे कैसे संभव हुआ, इसका खुले मन से अध्ययन होना चाहिए ।

२० अगस्त २०१३ को डॉ. नरेंन्द्र दाभोलकर की दुर्दैवी हत्या हुई । विनोद शिरसाठ संपादक बने साधना की यात्रा आज अधिक सशक्त चल रही है । शिरसाठ के लेखों में अधिक विविधता आई है । तथा आगे अच्छी पुस्तके भी निकाली। 'इकेबाना' यह दत्ता दामोदर नायक के संसार के अलग अलग देशों में की यात्राओं के रसपूर्ण तथा शैली से चित्रण करनेवाली पुस्तक या 'मुलांसाठी विवेकानन्द' यह दत्त प्रसाद दाभोलकर की ''जीवन में अलैकिक यश कैसे प्राप्त करें'' यह विवेकानद के शब्दों में कहने वाली पुस्तक आदि विविधपूर्ण प्रकाशन के अच्छे उदाहरण है । ''नौकर शाही के रंग'' (ज्ञानेश्वर मुळे) झुंडी चे मानसशास्त्र (विश्वास पाटील) 'चार्वाक' (सुरेश द्वादशीवार) 'लॉरी बेकर' अतुल देऊळ गावकर, या 'चिनी महासत्तेचा उदय' सतीश बागल भी ऐसी ही तथा नए आशय की विविधता वाली पुस्तकों ललित साहित्य प्रकाशित करने की ओर साधना ने थोडा बहुत ध्यान देवें ऐसा सुझाने की इच्छा है । एक समय में ''निष्पक्ष वृक्षपर भरी दुपहरी '' यह ह.मो. मराठे की छोटी पर वाचकों को प्रेरित करने वाली तथा मन को चुभने वाली कादम्बरी साधना के दिवाली अंक में पढा था, स्मरण हो रहा है । मेरी याददाश्त के अनुसार शंकर सारडा ने उस अंक का संपादन किया था । ऐसे साहित्य की कई वाचक आज भी प्रतीक्षा करते हैं ।

शिरसाठी ने युवा पीढि को नजरों के सामने रखकर कई डिझिटल प्रकल्प हाथ में लिए हैं । पुस्तकों की विक्री के लिए इंटरनेट का प्रयोग होता हैं । कर्तव्य- साधना, पोर्टल का वृतांत वाचक मोबाईल पर पढ तथा सुन सकते हैं । मराठी की तरह अंग्रेजी वृत्तान्त भी होता है । साधना के संकेतस्थल अभी तक है । तथ जल्दही साधना के पुराने अंक पढनेवालों को उनके संकेतस्थलों पर उपलब्ध होंगे । इसके लिए आवश्यक आर्थिक तथा तांत्रिक सहकार्य देने के लिए सुदैव से साधना को यश मिला है। साहित्य अकादमी पुरस्कारप्राप्त गोवा के एक लेखक और यशस्वी उद्योजक दत्ता दामोदर नायक तथा महाराष्ट्र ज्ञान महामंडल मर्यादित इस कम्पनी के प्रणेता तथा चीफ मेटॉर विवेक सावंत जो अब साधना ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं, इनके आस्थापन के विज्ञापन साधना में नियमित होते है । साने गुरूजी पर अभी श्रध्दा रखने वाले साधना के सर्वदूर फैले हुए हितचीन्तक और सुरेश माने, मनोहर पाटील जैसे सहकार्य देने वालों का योगदान महत्वपूर्ण है ।

यानी यह सब व्यवहार का हिस्सा हुआ । इसके लिए है आर्थिक सहायता । आज के युग में अर्थबल एक बार खडा कर सकते है परन्तु जिसके लिए यह सब कर रहे

है, उस स्वस्थ साहित्य की निर्मिति आगे के आव्हानों का सामना करना कठिन है । जैसे साहित्य को उसके समय के अग्रस्थान को प्राप्त कराने का बडा कठिन आव्हान है । आज साहित्य को अग्रस्थान नहीं प्राप्त है, यह स्पष्ट है । परिणामस्वरूप नियतकालिक प्राणवायु जैसे मान सकते हैं । ऐसे साहित्य की निर्मिति बहुत कम हो गई है । मोबाईल तथा टी.वी. से ज्ञान तथा मनोरंजन की बाढ आई हुई है । इस कारण पाठकों को पढने का समय निकालना कठिन हो गया । इस कारण पुस्तके या नियत्कालिक प्रत्यत्नपूर्वक छापा तथा वितरित किया प्रत्यक्ष में वह पढी जाती है क्या, यह प्रश्न मन में खडा रहता है । ''कर्दळीच्या कोंभाची लवलव ही तिची मुळे जिथे रूजलेली असतात त्या मातीतल्या ओलाव्याची खूण असते '' ऐसा ज्ञानेश्वर ने कहा है । साहित्य या कला की सुन्दरता भी जिस समाज से है । उस समाज के मूल में सांस्कृतिक नर्मी न होतो बाहर से पानी छिडकना कठिन है । दुर्भाग्य से आज के समाज में तो 'मुळीचा झरा' (जडों का गीलापन ) समाप्त हो रहा है । कैसे पुनः फैला सकेंगे, यह शताब्दि की तरफ बढते साधना के सामने और कुल साहित्य सृष्टि के सामने सबसे बडी चुनौती है ।

भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**
मो. ६३७७२३७१६०

# गांधी काल में भी था गोदी मीडिया

**– भारत दोसी**

आज हमे लगता है कि बड़े लोगों के बारे में मीडिया, सोशल मीडिया पूर्वाग्रह से लिखता है  सत्य कहीं खो गया है लेकिन ऐसा पूर्व में महात्मा गांधी के साथ भी होता रहा है। उनके काल मे भी गोदी मीडिया था।

महात्माजी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने विदेश गये थे तब स्लोचम नाम के एक अंग्रेज पत्रकार ने झूठ लिखा कि गांधी की विनम्रता नकली है उन्होंने प्रिंस ऑफ वेल्स के सामने साष्टांग दंडवत किया था।

गांधी को जब इस बात की जानकारी हुई तो उन्होंने स्लोचम से मधुर और स्वाभाविक स्वर मे कहा **आप जिस युवक की बात कहते है ( प्रिंस की ) उसके प्रति मेरे मन मे कोई विद्वेष नहीं है बल्कि व्यक्तिगत रूप से मैं उसकी मंगलकामना करता हूं। मैं सामने आई चींटी को भी पैर से कुचलना नहीं चाहता, बल्कि उसे सह्रदय करुणा की दृष्टि से देखता हूं लेकिन उसे साष्टांग दंडवत नहीं करता ।** स्लोचम सिर झुकाएं उनकी बात सुनता रहा।

आज झूठ परोसने वाले मीडिया को इतनी दृढ़ता से कोई नहीं सुना सकता ।

# पोती से किया मोबाईल सीखने का वादा !

**– श्रीनिवास स. डोंगरे**

हमारी पोती राधा दसवी में थी उसे लॉपटॉप पर ऑन लाईन शिक्षा '' अटेंड'' करना पडता था । इंटरनेट की उलझन आई कि वह परेशान हो जाती । उसकी चिडचिड देखकर मेरी पत्नी ने यानी राधा की दादी ने पोती को पास में बुलाया और बोली, अरी राधा शालेय पढाई, परीक्षा मार्क ही सबकुछ नहीं होता अभ्यास से अधिक सीखने के लिए कुछ अलग मैं तुझे आज से कुछ घर की सादी सादी व्यावहारिक बातें दिल बहलाने सिखाऊंगी । तेरा भी समय अच्छा बीत जाएगा ।

राधा तैयार हो गई । पत्नी ने कहा, परन्तु यह एक शर्त इसके बदले में मुझे और ( तेरे दादा) इनको मोबाइल और टॅब कैसे प्रयोग में लाना यह सिखाएगी ना....

'' ओके दादी डन ! कहते हुए राधाने मुठ्ठी बन्द के 'थम्स अप'' अंगूठा दिखाया । दादी बोली अंगूठा दिखाकर हमें छका मत बस ! राधा का उत्तर तैयार ही था तो दादी इसे घर के काम मत कराना बस, तो ऐसी हमारे सीखने की नयी शुरूआत हुई।

गणेश उत्सव नजदीक आ गया था। दादी ने फूलों की माला–तोरण बनाना सिखाया बुंदकीदार रांगोली सिखाई । तय किए अनुसार राधा ने मुझे पुराने सादे फोन के बदले में पहले स्मार्टफोन तथा अँड्राईड का टॅब लेने कहा । उसका मूल्य देखकर ही मैं धचक गया परन्तु पत्नी ने निश्चय किया था और गणपती के निमित्त से खरीद लिया ।

सीखने की सूची तैयार ही थी । उसीके अनुसार उसने मुझे मेसेज कैसे करना, आया हुआ मेसेज कैसे देखना रिश्तेदारों के नंबर कैसे सेव करना तथा व्हाटसअॅप कैसे देखना इ. सिखाया कॉल लॉग में जाकर किसका फोन आया था, यह कैसे देखना यह सिखाया ।

बहुत सी बारीक–बारीक बातें मोबाईल पर सीखीं, परन्तु हमारे सहस्त्रचन्द्र दर्शन के पास की उम्र होने के कारण बीच बीच में सिखाई हुई कुछ कुछ बातें भूल जाती। रादा बेटा, बहू आदि से बार बार पूछने पर वे चिढ जाते थे । फिर मैंने तथा मेरी पत्नी ने छोटी डायरी निकलवाई । उसमें बारीक बारीक बातें मोबाइल के स्टेप्स, चिन्हों सहित लिख ली । कुल मिलाकर मोबाइल का प्रयोग सीखना ही चाहिए यह ठान लिया।

उधर राधा कपडों को इस्त्री (प्रेस) करना, शर्ट को बटन लगाना, चाय बनाना ऐसे साधारण काम सीखती और एग्रिमेंट के अनुसार हम मोबाइल पर फोटो कैसे खींचना और कैसे भेजना यह सीखे । ''व्हॉटसअप'' पर चॅट करने लगे, '' यू ट्युब'' खोलकर देखने लगे ।

अब बेटा बाहर किसी गांव गया कि

'' व्ही.डी.ओ. कॉल करके गप्पे मारते । बहू से टॅब पर मराठी फाँट पर टाइप करना सीख गए । इसीके कारण छोटे-मोटे लेख टाइप करके पेपर में भेज सके । इस उम्र में ऐसे समय बहुत अच्छा गुजरता है । विचारों को गति मिलती है ।

पत्नी यू ट्यूब पर नई नई रेसिपी सीखती । वह भगिनी समाज (महिला मंडल) में तथा मैं हमारे चबूतरे पर जाने के बाद फॉरवर्डस आगे नहीं भेजता । अच्छी जानकारी, लेख, घर के समारंभों के फोटो आदि हम स्टेशनरी की दुकानवाले से ई-मेल करके प्रिंट निकालवा लाते हैं और उनकी स्प्रिंग फाइल बनाते, फोटो एलबम में लगाते और बाद में फोन मेमरी में से डिलीट करते है ।

हम मुंबई की मध्यवर्ती भाग की बस्ती में हैं । इसलिए मोबाइल से ऑन लाइन खरीदना, टेक्सी और उबर बुकिंग आदि सीखे । फिर भी उसका प्रयोग नही करते । अच्छे अच्छे लोग ऑनलाइन व्यवहार में फंसने के उदाहरण पेपर में पढते थे । खैर ! मित्रों और रिश्तेदारों में आसानी से सहजता से मोबाइल का प्रयोग करते हैं । दोनों ने एक दूसरे का डी.पी. रखा है ।

मोबाइल यह लकुटी नहीं परन्तु वृध्दों के लिए वरदान ही है । इस बात को ध्यान में रखकर उपयोग में लाते हैं, जिससे समय अच्छा बीतता है । और इस बात पर मेरा और उसका एकमत है ।

हिन्दी भाषान्तर : **मधुश्री आर्य**

मो. ६३७७२३७१६०

**काव्य भारती**

## अपने उजाले

जो हासिल है मेरी
जिंदगी को
उसकी उपस्थिति का
आनंद लेता हूँ,
जो कुछ नहीं है पास मेरे
उसके खालीपन में
पा लेता हूँ खुशी ।
जो था, पर अब नहीं
साथ मेरे
उसकी स्मृति में सुख
तलाश लेता हूँ,
आनंद, सुख,खुशी
स्वभाव में बसे हैं
बस में हैं मेरे जो मुझी
पर हैं निर्भर सदा ।
व्यक्ति, वस्तु या किसी
विशेषण का होना ना होना
मेरे सुख-दुःख का
अधिकारी नहीं हो सकता,
मनुज के गौरव का वंशज हूँ
अपने उजाले स्वयं रचूँगा,
अंधेरों का उत्तराधिकारी
नहीं कदापि हो सकता मैं।
इस धरा के नेह कणों में
अश्रुबीज नहीं बो सकता मैं ।

**- दशरथ कुमार सोलंकी**

**(संग्रहित)**

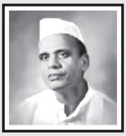

# भगवान के दर पे

– दीनानाथ रत्नपारखी, सोलापुर

'देवचिये द्वारी' शब्द का उच्चारण होते ही संत ज्ञानेश्वर के हरिपाठ का स्मरण होता ही है। महाराष्ट्र संतों की भूमि है। इस भूमि में ज्ञानेश्वर, तुकाराम, निवृत्तिनाथ, नामदेव, चोखामेला, मुक्ताबाई, सावतामाली, गोरा कुम्भार, सजनरुसाई जैसे संतों ने भागवत धर्म की पताका फहराई। वारकरी संप्रदाय की स्थापना हुई। चंद्रभागा के मरुस्थल में वह सबको साथ ले आया। यहां कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ हरिजन, ब्राह्मण , माली, कुनबी, नाई सब एक साथ समान हैं, इस मरुस्थल की महिमा अपरंपार है।

संत तुकाराम कहते हैं, **कठिन हृदय कोमल होता है। हमने निर्गुण निराकार को रूप दिया।** तुकाराम महाराज, जो मूर्ति के सामने खड़े होकर उसमें संपूर्ण ब्रह्मांड को देखते थे और मूर्ति में भगवान को देखना सीखते थे और मानव मूर्ति में, मवेशियों में भगवान को देखना सिखाते थे, कहते हैं,

**जहां देखो वहां खड़ा हुआ, केवल चेतना का सार।** पंढरपुर के विठोवा को बडवे उत्पात मंडली ने बंदी बनाकर रख दिया था। मंदिर के बाहर संत शिरोमणि चोखोबा की पुकार गूंज रही थी। दलित रूप में चोखोबा को विठोबा के दर्शन से वंचित रखा गया था। करुण स्वर में वे **'विठ्ठल नामाचा टाहो प्रेमभावो'** की गुहार कर रहे थे। हिंदू धर्म की सभी जातियों में अछूतों का तिरस्कार किया जाता था। अछूतों को सभी मानवाधिकारों से वंचित कर दिया गया था। एक बार जब कोई व्यक्ति शूद्र के रूप में पैदा होता है, तो अछूत के रूप में उसे बहिष्कृत कर दिया जाता रहा।

१९वीं शताब्दि के मध्य में, एक महान महाराष्ट्रीय युगज्ञ ने अछूतों के प्रति सामाजिक और धार्मिक अन्याय के विरुद्ध ठान ली। वह क्रांतिकारी पुरुष थे महात्मा ज्योतिबा फुले। अपने घरेलू पेयजल टंकी को अछूतों के लिए खोलकर सामाजिक समानता के युग का सूत्रपात किया। वहीं, उन्होंने १८४८ में पुणे के भिड़े वाडा में लड़कियों के लिए पहला स्कूल शुरू किया। अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए एक आंदोलन खड़ा हुआ। अस्पृश्यों की लड़ाई हिंदू धर्म में सवर्णों द्वारा थोपी गई 'गुलामी' के खिलाफ है और इससे छुटकारा पाने के लिए उनका आंदोलन जारी है और यह समाज सुधार का आंदोलन है,ऐसा राजश्री शाहू महाराज, बड़ौदा नरेश सयाजीराव शिंदे, डॉ. अम्बेडकर जैसे समाज सुधारकों का मानना था।

आर्थिक रूप से शोषित श्रमिक वर्ग, सामाजिक रूप से पिछड़े अछूतों के

प्रति सहानुभूति रखने वाले और उनकी दुर्दशा के लिए करुणा और प्रेम से भरे रहने वाले साने गुरुजी एक रचनात्मक व्यक्तित्व थे। पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर में हरिजनों का प्रवेश वर्जित है। उन्हें केवल अछूत मानकर उन्हें मंदिर में प्रवेश से वंचित करना मानवता का अपमान नहीं बल्कि मानवता के ऊपर एक कलंक है। इसके लिए, साने गुरुजी १ मई से १० मई १९४७ तक आमरण अनशन पर चले गए।

पूर्ण जिस भारत के लिए आजादी की लड़ाई लड़ी गई, उसमें समृद्ध, विकसित, अन्यायमुक्त, दमनमुक्त समाज के सपने साकार हों, अंतिम लोगोंतक का विकास हो, मन के भेद दूर हों, जातिवाद की दीवारें ढह जाएं, अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम किया जाना चाहिए और पूरे समाज को एकता और भाईचारे के बंधन में बांधना चाहिए ऐसा उन्हे लगता था।

गुरुजी अपनी आत्मकथा में कहते हैं, **'मैं जीवन का एक विनम्र उपासक हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे चारों ओर का सारा संसार सुखी और समृद्ध हो, ज्ञान और कला से समृद्ध हो, मजबूत और प्रेमपूर्ण हो। मेरा लिखना या बोलना, मेरे विचार या मेरी प्रार्थना इस एकमात्र उद्देश्य के लिए हैं।'** यह उनके मन की पवित्रता और नेक रवैये को दर्शाता है।

कई लोग मानते हैं कि गुरुजी का नाम श्याम था। यह इतना असत्य भी नहीं है। श्याम साने गुरुजी का व्यावहारिक नाम था। उनके माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार और दोस्त उन्हें श्याम के नाम से जानते थे। उनका असली नाम पांडुरंग है। कुछ नाम संयोग की अपेक्षा नाम धारण करने वाले व्यक्ति की संवेदना, ऊर्मी और समझ से जीवन के कार्यों से अधिक जुड़े होते हैं। उन्होंने अछूतों की भावनाओं और घावों को पहचाना। **प्रभु के हम सभी बच्चे उन्हें बडे प्रिय हैं,किसी की उपेक्षा न करे हम,जगत को प्रेम अर्पित करे।**

विठ्ठल मंदिर के द्वार हरिजनों के लिए खोल दिए गए। साने के पांडुरंगा का पंढरपुर के पांडुरंगा से ऐसा नाता जुड गया। इस महापुरुष ने अपनी कथनी और करनी से दुनिया को बता दिया कि बिना घिसे-पिटे जीवन सोना नहीं होता। **समानता का झंडा ऊंचा रखो भाई.....**, उन्होंने विनती की। उनका जीवन मानवता, जनसेवा और ध्येयों की भावना से ओत-प्रोत था। गुरुजी ने जीवन भर समाज में जातिवाद, प्रांतवाद और लक्ष्यहीनता को नष्ट करने का प्रयास किया। वे कहते थे-

**हाथ हरकामी,बुद्धि सर्वगामी , हृदय सर्वप्रेमी,ऐसी एक नई पीढ़ी का निर्माण करें।**

मो. ९०७५५२००८३

जिंदगी में सच के साथ हमेशा चलते रहिए
तो वक्त आपके साथ अपने आप चलने लगेगा

# कानूनों ने किसानों की दुविधा बढा दी

– नितिन फुलाबाई राठौड़, पुणे

खेती करने वाला किसान देहाती–अनपढ होता है, उसे कुछ नहीं आता, यह सार्वजनिक रूप से स्वीकृत समझ है। लेकिन असल में यह हम सबकी गलतफहमी है। इसी ग़लतफ़हमी से हर कोई जाग उठता है और अपनी बुद्धिमानी दिखाने लगता है ऐसे लोग किसानों को मुफ्त की सलाह देने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अपने अपने गांव के छोटे कुनबे से लेकर देश के प्रधानमंत्री के सर्वोच्च पद तक सभी इसमें शामिल है। ऐसे लोगों की सूची अंतहीन है।

क्या आप जानते हैं ? कृषि का इतिहास विश्व के इतिहास में सबसे पुराना इतिहास माना जाता है। लगभग दस से बारह हजार वर्ष पूर्व कृषि के आविष्कार के बाद से आज तक किसान कृषि करते आ रहे हैं। हमें अपनी खेती खुले में करनी पड़ती है। प्रकृति हमेशा कृषि के प्रति प्रतिकूल रही है। किसानों को हमेशा प्रकृति के साथ संघर्ष करना पड़ता है। यह उनका दैनिक जीवन जीने का संघर्ष है। उन्हें इस संघर्ष को लेकर कोई शिकायत नहीं है।

किसान सर्जक है, वह एक दाने को हजार अनाज में बदलने की कला जानता है। एक किसान एक महान कलाकार है और वह बीजों को जन्म देता है जिनसे नए बीज पैदा हो सकते हैं। ऐसे सर्जकों को 'इस तरह खेती करो' यह कहना सही नहीं है। क्या आप महसूस करते हैं कि जब हम कहते हैं कि किसान खेती नहीं कर सकते, तो हम अनजाने में उनकी स्वतंत्रता को नकार रहे हैं? यह एक अहम सवाल है। आज इस देश में प्रतिदिन ४३ किसान आत्महत्या करते हैं। ये आत्महत्याएँ इसलिए नहीं होतीं कि वह खेती नहीं कर सकता। सरकार ने उनके सभी मानवीय, मौलिक, प्राकृतिक, संवैधानिक अधिकार, हक छीन लिए हैं। उनकी आजादी छीन ली गई। इसलिए उन्हें आत्महत्याएं करनी पड़ती है।

किसान अपने माल की कीमत तय नहीं कर सकता। कृषि भूमि किसानों की आय का मुख्य स्रोत है। हालांकि इस देश के किसानों को यह आजादी नहीं मिली है कि कितने क्षेत्रफल में खेती की जाए। सीलिंग नामक एक कानून कहता है कि आपको एक निश्चित क्षेत्र पर ही खेती करनी है। आप उस क्षेत्र से अधिक खेती नहीं कर सकते। इस कारण किसानों की कंपनियां नहीं बन सकीं। और इस कानून की वजह से किसानों की आय, कृषि क्षेत्र, आर्थिक स्वतंत्रता पर भारी प्रतिबंध हैं। फिर ऐसी अवस्था में उसे कानून द्वारा बनाई गई गुलामी में रहना पड़ता है। इसीका नतीजा है कि हम इस देश में हर रोज किसानों की आत्महत्याएं देखते हैं। इस देश में विभिन्न कृषि विशेषज्ञ हैं जिन्होंने इस देश की सरकार को विभिन्न रिपोर्टें प्रस्तुत की हैं,

जिसमें उनका कहना है कि इस देश में करीब ८० फीसदी किसान दो एकड़ या उससे कम पर खेती कर रहे हैं। वह आगे कहते हैं कि जिन किसानों की जमीन दो एकड़ या उससे कम है उनमें आत्महत्याएं बहुत अधिक देखी जा रही हैं। कानून के ऐसे अदृश्य हथियार आए दिन किसान की गर्दन पर वार करते नजर आते हैं।

वर्तमान में भारतीय कृषि खंडित रूप में है। हर नई पीढ़ि के हिस्से में जमीन के छोटे–छोटे टुकड़े बंटवारे में आ रहे हैं। तो बताओ, जब खेती की ऐसी हालत है तो कौन सा काबिल आदमी खेती करने के लिए आगे आएगा? आज कृषि में कर्तृत्व से सफल होने का कोई अवसर नहीं है, इसलिए हमें कृषि में ऐसे लोग नहीं आते दिखाई देते हैं जो अपनी उपलब्धियां दिखा सकें। नतीजतन, भारतीय कृषि में कोई पूंजी–निवेश नहीं हो रहा है। वास्तव में भारतीय कृषि बहुत अच्छी मानी जाती है लेकिन ऐसे किसान– विरोधी नरभक्षी कानूनों द्वारा बनाई गई गुलामी के कारण किसान स्वतंत्र रूप से खेती नहीं कर सकते हैं। नए लोग नहीं आ रहे, पूंजी नहीं लग रही है।

**पहली घटना बिगाड (मरम्मत)**

इस देश में किसानों को उनके बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रथम संविधान संशोधन ने अनुसूचि नौ को जन्म दिया, जो मूल संविधान में नहीं था। और यह नमूद किया गया था कि अनुसूचि नौ में शामिल कानूनों के खिलाफ किसी भी अदालत में कोई अपील नहीं होगी। और जैसा कि आज है, अनुबंध नौ में कुल २८४ कानून हैं जिनमें से लगभग २५० कानून कृषि से संबंधित हैं। और इस कानून के खिलाफ अदालतों के दरवाजे बंद हैं। कोर्ट में अपील नहीं कर सकता। संक्षेप में, भारतीय किसान एक अदृश्य जंजीर से जकड़ा हुआ है।

किसानविरोधी नरभक्षी अधिनियम आवश्यक वस्तुओं की सीमाभूमि अधिग्रहण के तीन प्रमुख कानून हैं जो किसानों को अपने कृषि व्यवसाय को स्वतंत्र रूप से करने से रोकते हैं। आज का किसान इस स्थिति में है कि एक तरफ खेती अपेक्षित लाभ नहीं देता और दूसरी तरफ खेती छोड नहीं सकता। यह गड़बड़ी पहले संविधान–संशोधन के कारण हुई थी। संविधान में १८ जून १९५१ को यह संशोधन किया गया था। यह दिन किसानों की आजादी छीन कर उन्हें गुलाम बनाने का दिन है।

**– किसानपुत्र आंदोलन**
पुणे मो. ८३२९२४८०३९.

**उन पर ध्यान मत दीजिये**
**जो आपकी पीठ पीछे बात करते है,**
**इसका सीधा सा अर्थ है**
**आप उनसे दो कदम आगे है।**

विशेष पुस्तक

# किसान विरोधी कानूनविषय में पुस्तक
## (शेतकरीविरोधी कायदे)
## १८ जून को लातूर में प्रकाशन लातूर

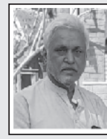

किसान पारतंत्र दिवस के अवसर पर लातूर में शेतकरी संगठन द्वारा आयोजित किसान मेले में अमर हबीब द्वारा लिखित मराठी पुस्तक 'शेतकरी विरोधी कायदे' के नए संस्करण का विमोचन किया जाएगा।

दोपहर १ बजे पत्रकार भवन में होने वाली बैठक में किसान संघ के अध्यक्ष ललित बहाले, १९ मार्च से जिले का दौरा कर रहे अनंत देशपांडे, किसानपुत्र आंदोलन के अमर हबीब, डॉ. राजीव बसरगेकर, अमृत महाजन मार्गदर्शन करेंगे।

इस पुस्तिका में किसान विरोधी सीलिंग, आवश्यक वस्तुओं, अधिग्रहण और परिशिष्ट ९ से संबंधित सभी संदेहों को दूर किया गया है। सीलिंग हट गई तो क्या फिर जमींदारी आएगी? क्या पूंजीपति आएंगे? क्या स्वामीनाथन आयोग की वह सिफारिश किसानों के हित में है? किसान आत्महत्याओं के लिए कौन जिम्मेदार है? ऐसे ३७ प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तिका में पढ़े जा सकते हैं।

इस पुस्तिका को अमर हबीब ने लिखा है। वे शुरू से ही किसान आंदोलन में सक्रिय रहे हैं। उन्हें पत्रकारिता का लंबा अनुभव है। उनके द्वारा लिखी गई इस किताब ने किसान समस्या के मूल को छू लिया है।

(इस पुस्तिका का हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है।)

# बिहार आंदोलन

५ जून १९७४ के गांधी मैदान के अपने भाषण में जेपी कहा था –

७ जून से विधानसभा के दरवाजों पर सत्याग्रह किया जाय, हम सब गेटों पर खड़े हो जायें। एम.एल.ए. साहब आएं,मंत्री साहब आएं, उनको रोकें कि आप अंदर नहीं जाइये। जाना है तो हमारी पीठ पर से जाइये। हम आपको जाने नहीं देंगे,असेम्बली चलने नहीं देंगे। गिरफ्तारियां होंगी , हम जेलों को भर देंगे ।

७ जून को विधानसभा के दरवाजों पर पुलिस का भारी पहरा था । श्री रामानंद मिश्र के नेतृत्व में ५२ सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारी दी । इसमें ३० छात्र और शेष सर्वोदय कार्यकर्ता थे।

**–महादेव विद्रोही**

# संघर्ष - ए- मोहब्बत

– तमन्ना इनामदार

जातिअंत के लिए आन्तरधर्मीय आंतरजातीय विवाह होने चाहिए जिससे दो धर्मों की भिन्न संस्कृति–परंपराओं का संगम होकर एक अलग धर्मरहित समाज का निर्माण होगा । यह अगर सच है तो भी आन्तरधर्मीय–आंतरजातीय विवाह करनेवालों की अपेक्षा समाज को ही ऐसे विवाह सहन करना कठिन जाता दिखता है । मनुष्य की आदिकाल से ही प्रेम करने की मूलभावना है । प्रेम को जाति धर्म का परहेज नहीं । अमीरी–गरीबी का बन्धन नहीं दो भिन्न लिंगीय (आजकल भिन्न लिंगीय यह शब्द लागू नहीं है) व्यक्तियों के विचार, स्वभाव , पसन्द–नापसन्द, तथा समान मत हो तो व्यक्ति की मित्रता बाद में प्रेम के नाते में बदलती है तथा सब तरफ से विचार करके ये लोग विवाह करने के निर्णय तक पहुंचते है । पढालिखा, ज्ञानी व्यक्ति भारतीय संवैधानिक अधिकार तथा अधिकारानुसार कानूनी अपना जोडीदार चुनता है तो समाज को, धर्मवादियों को, स्वयं घोषित संस्कृति के रक्षकों के पेट में दर्द उठनेका क्या कारण है ? अट्ठारह वर्ष के बाद मतदान का अधिकार भोग कर, एकसौ तीस करोड लोकसंख्या वाला, संसार की सबसे बडी लोकशाही वाला देश किस नेता के हाथ में सौंपना यह निर्णय ले सकते हैं तो समझदार कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन का विचार करके अपना जोडीदार क्यों नहीं चुन सकता ? पहले प्रकरण में निर्णय गलत होने का कुछ समय बाद ध्यान में आता है, तथा दूसरे प्रकरण में यह निर्णय गलत होने की संभावना हो सकती है इसलिए क्या अपनी पसन्द के व्यक्ति से विवाह न करें ।

वैसे भी विवाह जिसका उसका अत्यन्त व्यक्तिगत मामला है । उसमें समाज को अपनी नाक घुसाने की आवश्यकता नहीं, फिर भी आन्तर धर्मीय–आन्तर जातीय विवाह कहते ही लोगों के कान खडे हो जाते हैं और नजरे शंकावाली होती है । एकबार विवाह के अलावा संबंध चलते हैं, परन्तु विवाह की चौखट स्वीकार करके लग्नसंस्था पर रखा हुआ विश्वास नहीं चलता इसका कारण केवल धर्माभिमान है, मेरा धर्म बडा, मेराही धर्म श्रेष्ठ अन्य धर्मवालों ने अपना धर्म छोडकर मेरा धर्म श्रेष्ठ अन्य धर्मवालों ने अपना धर्म छोडकर मेरा धर्म स्वीकार करना जिससे मेरा धर्माभिमान संतुष्ट होगा यह धार्मिक अहंभाव की भावना इस विरोध के पीछे होती है । आन्तर धर्मीय–आन्तरजातीय विवाह क्या आज ही होते हैं ऐसा नहीं । ऐसे विवाहों की भारत मे ऐतिहासिक परम्परा है, बडी विरासत है इन विवाहों की मानवसमाज ने

विवाहसंस्था स्वीकारने के बाद ऐसे लाखों विवाह हुए हैं, होते हैं । प्रेम है इसलिए राजकीय समझौता कहकर नए नाते संबंध बनाने के लिए ऐसे विवाह होने के ऐतिहासिक अनेक उदाहरण मिलेंगे । आज भी अनेक राजनीतिक व्यक्ति, उद्योगपति , नेता, अभिनेता विवाह करके घर में बहु तथा दामाद लाने के अनेक उदाहरण प्रमाणसह सोशल मीडिया में हम तक पहुंचते हैं । फिर भी संस्कृति–रक्षण के नामपर बीच बीच में होहल्ला करके विरोध जताई तथा दहशत फैलाई जाती है । उनके ये कृत्य स्वयं के लिए, धर्म के लिए नहीं करते अपितु इनको करनेवाला व्यक्ति दूसरा ही होता है तथा इस दहशत के पीछे का उद्देश्य धर्मरक्षण न होते हुए सत्तारक्षण, अपना वर्चस्व सुरक्षित रखना होता है ।

इस काम मे दोनों धर्मों के लोग स्पर्धास्वरूप आगे आते हैं । ऐसे विवाह करने वालों की जानकारी विवाह पंजीकरण कार्यालय से प्राप्त करके सामाजिक माध्यम से व्हायरल करके लोगों को भावनिक आहवान करना कि यह लडकी यह लडका दूसरे धर्मी व्यक्ति से विवाह कर रहे हैं। कृपया यह जानकारी उनके पालकों तक पहुंचा कर यह विवाह रूकवा कर धर्म को डूबने से बचाए । मजे की बात है कि यह शोर मचाने वाले इस झंझट में नहीं पडते । फोटो, जानकारी प्राप्त करने की इच्छा ही नहीं होती, हाथ में सहजता से प्राप्त साधनों द्वारा वे दूसरों तक पहुंचाकर धर्मरक्षण का पुण्य प्राप्त करने में धन्यता मानते हैं, बाकी देखने वालों में धर्म के प्रति का प्रेम उमडता है और वह आगे फॉरवर्ड करके अंगुली कटाके शहीदों मे शामिल होते हैं ।

समाज को धर्म के नाम पर विभाजित करने में अत्मिक आनन्द मिलता होगा । मनभेद, बुध्दिभेद, मतभेद, रंगभेद, जातिभेद, लिंगभेद इत्यादि भेदभावों के अंगारों पर स्वयं की रोटी सेंकना तथा धर्मकार्य करने का समाधान लेना, हिन्दु ने मुसलमान से विवाह किया कि 'लव जिहाद' और मुसलमान ने हिन्दु से विवाह किया तो 'घरवापसी' ऐसा शब्दभेद प्रयोग में लाकर स्वयं की धार्मिक श्रध्दा दर्शाने में इनको आनन्द मिलता है । स्वधर्म में विवाह से दरदर की ठोकर खाती लडकियां कन्या न मिलने से परेशान लडके, उन पालकों की समस्या आदि का इससे लेना–देना नहीं। इनकी कर्तव्यपरायणता जीवित मनुष्यों से ज्यादा धर्म को समर्पित होती है, खैर चलो ऐसे विवाह प्रयत्नपूर्वक टूट जाते हैं तो इन कन्याओं से आगे चलकर कौन विवाह करेगा, उसे कितनी अडचने आएंगी, पालकों के सामने आनेवाली समस्याओं का उपाय ढूंढना होगा परन्तु वैसा कही कुछ होता नहीं दिखता ।

इस लेख को प्रकाशित करने के पीछे कारण यह है कि आन्तरधर्मीय विवाह करने वालों के अनुभवों पर आधारित पुस्तक '' मार्ग माझा वेगळा'' इस पुस्तक के लिखने के लिए अनेक युगल मिले । उनसे

बात की, चर्चा की । इस विवाह के करने में सिम्पल (सरल) सीधी बात थी । यह एक दूसरे के विचार, रहन सहन, पसन्द नापसन्द आया । मित्रता हुई, एक दूसरे को जांच लिया, किसी को खुश करने नहीं, किसी को दुःखी करना बात यह कि अपने लिए हुए निर्णय पर दोनों दृढ तथा संतुष्ट है, ऐसा दिखा फिर समाज को भौंए चढाने का कोई कारण नहीं, आनन्द के साथ जीवन जी रहे हैं । दोनों धर्मों के त्योहार–समारोह, पकवान, रस्मो–रिवाज का उपभोग करते हैं।

इनके इस सामंजस्य के साथ जीवन यापन की सराहना करने के पहले मां बाप की सराहना करनी चाहिए । उम्र के पच्चीस वर्ष गृहस्थी में बिताने के बाद बच्चों की विचारदृष्टि कितनी अलग, प्रवाह के विपरीत होती है तो इनके विचारबीज पालकों के संस्कारों से ही डले होंगे । बच्चों ने कमाल किया, अलग से काम किया । बुद्धिवान, शीलवान पैदा हुए तो पालकों के उत्तम संस्कारों का बरवान होता है, फिर इन धाडसी, धर्म निरपेक्ष तथा अन्य धर्मीयों को स्वीकार करने में ही इन पालकों के संस्कारबीज होते हैं, यह स्वीकार करने चाहिए । जाति की चौखट को छोडकर मनुष्यता को स्वीकार करते हुए सहजीवन जीनेवालों का अभिनंदन तथा तारीफ होनी चाहिए । सच तो यह है यह कहना उतना आसान नहीं, वैचारिक–मानसिक सामंजस्य, सामाजिक दबाब, परिवार का तनाव और विवाहोपरान्त आनेवाली जिम्मेवारियां आदि अनेक समस्याओं में से गुजरते हुए कठिनाइयां उनको ही मालूम होती है । जिन्हें यह मान्य नहीं उन्होंने इन्हें कष्ट पहुंचा कर दिक्कते बताकर डराना– ऐसा पाप तो कमसे कम नहीं करना चाहिए । धर्मांतर विरोधी कानून बनानेवाले संविधान ने दिए मूलभूत अधिकार प्रति हडताल दिखा कर समाज में रहने वाले मरमर करने वाली प्रेम संवेदना कभी भी बधिर न हो टूटे बस यही प्रार्थना है।

**कौमी एकता, मानवीय एकता के लिए अपने प्राणों की कुर्बानी देने वाले वसंत – रजब को उनके शहादत दिन पर विनम्र अभिवादन!**

१ जुलाई १९४६ को वसंतराव हेगिस्टे व रजबअली लाखाणी अहमदाबाद में दंगे को शांत करते हुए शहीद हुए। उस समय वसंत की उम्र चालीस वर्ष व रजब की सत्ताईस वर्ष की थी। देश के इतिहास में यह दूसरा उदाहरण है जिसने कौमी एकता के लिए अपने प्राणों की आहुती दी और पहला उदाहरण है, गणेश शंकर विद्यार्थी जी का ! इनकी शहादत से हमारे देश का तानाबाना बुना गया है। इस तानेबाने को, इस विरासत को नष्ट करनेवाली राजनीति के खिलाफ आवाज बुलंद करना यही वसंत

– रजब को सही श्रद्धांजलि होगी।

**मानवीय एकता**

ज्ञानेंद्र कुमार मो. ९५७९९४२४३३

जयंत दिवाण मो. ८३५५८८०१८५

## नेपाल के नरपति कुंजेड को इसवर्ष स्नेहसंवर्धन पुरस्कार

अंबाजोगाई- आंतर भारती आंबाजोगाई की ओर से हर साल दिया जानेवाला स्नेह संवर्धन पुरस्कार इस वर्ष २५ साल पहले जियेगाव (नेपाल) से स्थलांतरित होकर आंबाजोगाई में अपना सार्थक जीवन जीनेवाले नरपति कुंजेड को दिया जाएगा। १५ अगस्त को यह पुरस्कार दिया जाएगा।

## लातूर में साने गुरुजी स्मृतिदिन

यहां के ज्येष्ठ नागरिक संघ, कार्यालय में साने गुरुजी स्मृति दिन मनाया गया। इसमें आंतर भारती ज्येष्ठ नागरिक संघ सदस्य उपस्थित थे। श्रीमती मंदाकिनी जगताप का आहिल्याबाई होळकर पुरस्कार से सम्मान किया गया। अध्यक्ष डॉ. बी.आर. पाटील थे। शिवाजीराव सूर्यवंशी ने साने गुरुजी का परिचय कराया।

## आंतर भारती मूर्तिजापुर शाखा स्थापित: कार्यकारिणी का चयन

**यहां की कार्यकारिणी ५ जून २०२३ को चुनी गयी।**

१) अध्यक्ष : प्रा. सुधाकर गौरखेडे २) उपाध्यक्ष : प्रा अविनाश बेलाडकर

३) कोषाध्यक्ष : डॉ. रामकृष्ण गावंडे ४ ) कार्यवाह : प्रमोद राजंदेकर

## आंतरभारती, संभाजीनगर की ओर से साने गुरुजी कथामाला-प्रारंभ के अवसर पर

जुलाई 2023 पंजीकरण 11257/66
डाक पंजीकरण : L2/RNP/OMD/71/2021-23

आंतर भारती पुणे शाखा की कार्यकारणी संपन्न उपस्थित मान्यवर

## पुणे आंतर भारती की बैठक

पुणे : ११ जून २०२३ के दिन दोपहर ४.३० बजे आंतर भारती शाखाध्यक्षों की उपस्थिति में राष्ट्रसेवादल कार्यालय में बैठक संपन्न हुअी । डॉ. कोरे डी.एस.तथा अध्यक्ष सुश्री अंजली कुलकर्णी ने साने गुरुजी के जीवन पर वक्तव्य किया । सामाजिक एकता, सामान्यजन तथा महिला सबलीकरण, कृषक विकास इ. विषयोंपर प्रकाश डाला । तत्पश्चात बैठक में आंतर भारती प्रचार-प्रसार, गुरुजी के विचारों को स्वप्नों को साकार करना, उसके अनुसार कृति करना इ. विषय पर चर्चा हुअी ।

उसी क्रम में दृष्टिहीन बालक शिविर रूपरेखा पर मा. राम माने, पारेख सर डॉ. आबनावे इ. कार्य करेंगे यह तय हुआ । मा. मयूर बागुल ने कार्यप्रणालि की रूपरेखा बतायी । समविचारी संस्था - युवा साहित्यकार आदि के साथ कार्यक्रम, पूर्वसंपन्न शिविरों का पुनरावलोकन, करिअर मार्गदर्शन इ. उपक्रम, संयुक्त तत्वावधान में कुछ कार्य, करने का निश्चय हुआ । सभी योगदान देनेवालों का आभार व्यक्त करते हुए बैठक समाप्त हुअी ।

– राम माने, पुणे

## औरंगाबाद आंतर भारती की बैठक संपन्न

औरंगाबाद आंतर भारती की बैठक २० जून २०२३ को राष्ट्रीय कार्यवाह डॉ. डी.एस.कोरे तथा शाखा अध्यक्ष ॲड. शिंदे की अध्यक्षता में संपन्न हुअी । राजस्थान बैठक यात्रा पर मनन, निवास भोजन, प्रवास (राजस्थान यात्रा) संदर्भ में समिति गठन, शाखाविस्तारार्थ आजीव सदस्य संख्या बढाना, आंतर भारती प्रचारार्थ स्कूल, महाविद्यालय, सामाजिक संस्थाओं को भेट, सभा के लिए अनुकूल स्थान, न्यायमूर्ति पाटील का सत्कार, वर्षभर में सैर, राष्ट्रीय आंतर भारती के लिए योगदान इ. विषयोंपर चर्चा हुअी । बैठक में कार्यवाह डॉ. अलका वालचाळे, उपाध्यक्ष प्रतिभा शर्मा, उज्वला निकाळजे, गजानन चिमणकर, सौ. शकुंतला कोरे, प्रा. कैलास पैठणे एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे ।

– प्रेषक – डॉ. अलका वालचाळे